

पक्षियों की प्रबंधन क्षमता

एस. अनंतनारायण

योजनाएं बनाना, उनका संचालन और प्रबंधन करना, अभी तक मनुष्य की अद्वितीय विशेषताओं के रूप में गिने जाते रहे हैं। परंतु वेस्टर्न स्क्रब जे नामक पक्षी के एक ताज़ा अध्ययन में यह बात सामने आई है कि पक्षी अपना भोजन जमा करने में बहुत ही योजनाबद्ध तरीका अपनाते हैं।

कुछ समय पूर्व एच.एल.एल. और टाटा सन्स के प्रबंधक आर. गोपालकृष्णन ने अपनी पुस्तक *द केस ऑफ द बोन्साई मैनेजर - लेसन्स फ्रॉम नेचर* का विमोचन मुम्बई में किया। यह पुस्तक प्रकृति के सबक और जानवरों के व्यवहार पर ध्यान आकर्षित करती है। साथ ही यह भी बतलाती है कि कैसे आचरण या बर्ताव धीरे-धीरे प्रबंधन को प्रभावित करते हैं। किताब में यह भी बताया गया है कि सृजनशीलता व सहजबोध का उपयोग कैसे करें।

इस मौके पर गोपालकृष्णन ने बताया कि प्रत्येक प्राणी के मस्तिष्क में आधार की तरफ एक रेप्टीलियन हिस्सा होता है जो जीवन के लिए ज़रूरी प्रवृत्तियों (सर्वाइवल इंस्टिंक्ट्स) को नियंत्रित करता है। मस्तिष्क का 'लिम्बिक सिस्टम' भावनाओं को नियंत्रित करता है और यह अधिकांश प्राणियों में पाया जाता है। 'सेरेब्रल कॉर्टेक्स' उच्च श्रेणी के स्तनधारियों में काफी विकसित होता है, जो उन्हें सोचने-समझने व तर्क करने की क्षमता प्रदान करता है।

उन्होंने एक उदाहरण के द्वारा अपनी बात को समझाया है। एक गिलहरी और एक भूखे आदमी को भोजन से दूर रखा गया और बीच में एक पतली तख्ती रखी गई जिसे पार करके भोजन पाया जा सकता था। जब उन्हें छोड़ा गया तो दोनों तेज़ी से भागे और भोजन तक पहुंच गए। लेकिन यही व्यवस्था जब ज़मीन से 100 फीट की ऊंचाई पर बनाई गई तो गिलहरी ने तो अपने प्रयास जारी रखे और भोजन तक पहुंच गई लेकिन आदमी ने भूखे रहना ही ज़्यादा पसंद किया।

तार्किक और सोचने-विचारने की क्षमताओं के चलते

इन्सान यह अनुमान लगा लेता है कि अगर वह गिर गया तो क्या होगा। योजनाएं बनाने की क्षमताओं का होना उच्च

स्तनधारियों का विशिष्ट लक्षण या गुण है। यही गुण मानव को अन्य जीवधारियों से उच्चतर स्थिति प्रदान करता है। इसी क्षमता के चलते मनुष्य अपनी सुविधाओं के लिए पर्यावरण में भी हस्तक्षेप करने लगा है।

बहुत से जीवधारी ऐसे हैं जिनमें ऐसी अनेकों मूल प्रवृत्तियां हैं कि वे भविष्य का इन्तज़ाम करते हैं। लेकिन अभी तक ऐसा कोई उदाहरण नहीं देखा गया है जिसमें जंतु अपने अनुभव और पूर्व व्यवहार के परिणाम के आधार पर किसी एक क्रिया की तुलना में किसी दूसरे को वरीयता देता हो। आम तौर पर ऐसा निर्णय अनुकूलन का परिणाम होता है।

निकोला क्लेटन और उनके सहयोगियों ने नेचर में प्रकाशित अपने एक ताज़ा शोध पत्र में बताया है कि *एफिलोकोमा कैलीफोर्निया* नामक पक्षी भविष्य की योजनाएं बनाने की अद्भुत क्षमता प्रदर्शित करता है। इस पक्षी को *कैलीफोर्निया जे* अथवा *लांग टैल्ड जे* भी कहते हैं। वैसे इंसान में भी यह योग्यता पैदाइशी नहीं होती; बच्चे 2 साल की उम्र के बाद ही भविष्य के बारे में सोचने की क्षमता विकसित कर पाते हैं। मगर अन्य जीवों द्वारा प्रदर्शित किसी भी प्रकार का भविष्यदृष्टा व्यवहार या तो उनकी पूर्व निर्धारित क्रियाओं का हिस्सा होता है अथवा उनकी उस समय की ज़रूरत से प्रेरित। उदाहरण के लिए प्रवासी पक्षियों का दक्षिण की ओर उड़ना अथवा चूहे द्वारा भोजन पाने के लिए किसी लीवर को दबाना।

क्लेटन और उनके सहकर्मियों ने अपने प्रयोगों द्वारा यह प्रदर्शित किया कि जे पक्षी भोजन संग्रहित करते समय ऐसे स्थानों को चुनते हैं जहां अगली सुबह उतरने पर उन्हें



भूखे होने का अनुमान होता है। वे उन स्थानों पर ऐसा भोजन संग्रहित करते हैं जहां उसकी कमी होती है।

प्रयोग में जे को सर्वप्रथम कुछ दिनों तक हर शाम पाइन नट का पाउडर दिया गया, जिसे वे संग्रहित नहीं कर सकते थे। इस दौरान वे तीन कमरों के संकुल में से बीच वाले कमरे में रखे गए थे। इसे ब्रेकफास्ट कक्ष कहा गया। अगली सुबह उन्हें किनारे वाले कक्ष में बंद कर दिया गया। यह ब्रेकफास्ट-रहित कक्ष था। यदि वे ब्रेकफास्ट कक्ष में होते तो उन्हें भोजन मिलता। लेकिन यदि वे ब्रेकफास्ट-रहित कक्ष में होते, तो उन्हें कुछ भी नहीं मिलता।

कुछ दिनों तक यही चलता रहा। एक शाम दोनों कमरों में साबुत पाइन नट खाने को दिए गए और दोनों साइड वाले कमरों में रेत से भरी ट्रे रख दी गई। प्रयोग के दौरान देखा गया कि पक्षियों ने पाइन नट ले जाकर ब्रेकफास्ट-रहित कक्ष में संग्रहित कर लिए - ब्रेकफास्ट कक्ष की तुलना में 3 गुना अधिक नट उन्होंने साइड वाले कमरों में जमा किए।

महत्वपूर्ण बात जो गौर की गई कि जब उन्हें बीच वाले कमरे में साबुत नट दिए गए और साइड रूम में संग्रहण के लिए ट्रे दी गई, तो पहली बार में ही उन्होंने नट संग्रह किया। अर्थात् यह किसी पारितोषिक के लालच में की गई क्रिया नहीं थी क्योंकि पहली बार में ही उन्होंने सही समझ

लिया था।

अगले प्रयोग में 2 अलग-अलग प्रकार के भोज्य पदार्थों का चयन किया गया - मूंगफली और डॉंग फूड। शाम को ये दोनों ही प्रकार के भोज्य पदार्थ उन्हें मिले। अगली सुबह उन्हें दोनों साइड कमरों में भोजन मिला मगर एक साइड रूम में मूंगफली जबकि दूसरे में डॉंग-फूड दिया गया। एक बार फिर से उन्हें अगली सुबह के लिए फूड संग्रहित करने का मौका दिया गया तो उन्होंने पुनः मूंगफली को डॉंग-फूड कक्ष में और डॉंग-फूड को मूंगफली कक्ष में संग्रहित किया। इसके पीछे सिर्फ एक ही तर्क काम करता लगता है - अगली सुबह उन्हें मूंगफली कक्ष में मूंगफली तो मिल ही जाएगी अतः डॉंग-फूड को वहां संग्रहित किया जाए। यही योजना डॉंग-फूड कक्ष के लिए भी रही।

प्रयोगों के द्वारा इस बात की पहचान की जा चुकी है कि योजना बनाते, सोचते और याद रखते समय मुनष्य के दिमाग का कौन-सा हिस्सा सक्रिय होता है। जे के बारे में हम पूरी तरह नहीं कह सकते कि वे वाकई भविष्य को ध्यान में रखकर यह सब कुछ कर रहे थे अथवा कल के बारे में सोच-विचार किए बिना ही। लेकिन प्रयोगों ने यह अवश्य दर्शाया कि पक्षियों को उन ज़रूरतों को पूरा करने की चिंता अवश्य थी जो 12 घंटे बाद उत्पन्न होने वाली थीं।

(स्रोत फीचर्स)